International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 02 | Feb - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

राजनीतिक अस्थिरता का भारत-नेपाल आर्थिक संबंधों पर प्रभाव

प्रशांत कुमार[1] एवं डा. मो. इर्शाद अली[2]

[1]शोधार्थी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर-812007

[2]सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान विभाग, बी0एन0 कालेज, भागलपुर

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर - 812007

शोध-सार

भारत और नेपाल के बीच आर्थिक संबंध सदियों पुराने हैं, जो खुली सीमा, व्यापार, ऊर्जा सहयोग और मानव संसाधन प्रवास पर आधारित हैं। हालांकि, नेपाल की लगातार राजनीतिक अस्थिरता इन संबंधों को गंभीर रूप से प्रभावित करती रही है। यह शोध पत्र नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता के ऐतिहासिक और वर्तमान संदर्भों का विश्लेषण करता है तथा इसके भारत-नेपाल आर्थिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों की पड़ताल करता है। 2025 में नेपाल में जेन जेड नेतृत्व वाली विरोध प्रदर्शनों ने प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली के इस्तीफे को जन्म दिया, जिससे आर्थिक क्षति अनुमानित 22.5 अरब डॉलर की हुई। यह नेपाल के जीडीपी का लगभग आधा हिस्सा है। इस अस्थिरता ने सीमा व्यापार को बाधित किया, रेमिटेंस प्रवाह को प्रभावित किया तथा निवेश परियोजनाओं को विलंबित किया। शोध के माध्यम से हम पाते हैं कि राजनीतिक उथल-पुथल आर्थिक नीतियों की अनुपस्थिति को जन्म देती है, जो दोनों देशों की वृद्धि को बाधित करती है। सुझावों में द्विपक्षीय संवाद, क्षेत्रीय एकीकरण तथा आर्थिक विविधीकरण शामिल हैं। यह पत्र साहित्य समीक्षा, ऐतिहासिक विश्लेषण तथा हालिया घटनाओं पर आधारित है, जो दर्शाता है कि स्थिरता ही साझा समृद्धि की कुंजी है।

शब्दकुंजी: राजनीतिक, आर्थिक, खुली सीमा, व्यापार और ऊर्जा सहयोग इत्यादि

परिचय :

भारत और नेपाल के बीच संबंध प्राचीन काल से ही घनिष्ठ रहे हैं, जो सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक निकटता पर आधारित हैं। 1950 के शांति तथा मैत्री संधि ने इन संबंधों को औपचारिक रूप प्रदान किया, जिसमें खुली सीमा तथा व्यापारिक सुविधाओं का प्रावधान है। आर्थिक दृष्टि से, भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जहां 2024 में भारत ने नेपाल को 7.32 अरब डॉलर का निर्यात किया, जबकि नेपाल का भारत को

निर्यात मात्र 81.6 मिलियन डॉलर रहा। यह असंतुलन दोनों देशों के लिए चुनौती है, लेकिन सहयोग के अवसर भी प्रदान करता है, जैसे जलविद्युत परियोजनाएं तथा बुनियादी ढांचा विकास।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता इन संबंधों का सबसे बड़ा खतरा बनी हुई है। नेपाल, जो हिमालयी बफर स्टेट के रूप में जाना जाता है, ने 1951 में राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर कदम बढ़ाया, लेकिन उसके बाद से 13 संविधान, 30 प्रधानमंत्री तथा असंख्य गठबंधन सरकारें देखीं। 2025 में यह अस्थिरता चरम पर पहुंची, जब 4 सितंबर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाने के बाद जेन जेड युवाओं ने बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू किए। ये प्रदर्शन भ्रष्टाचार, बेरोजगारी तथा आर्थिक असमानता के खिलाफ थे, जो 9 सितंबर को ओली के इस्तीफे में परिणत हुए। इससे उत्पन्न हिंसा ने काठमांडू सहित प्रमुख शहरों को प्रभावित किया, तथा आर्थिक हानि 22.5 अरब डॉलर तक पहुंच गई।

इस अस्थिरता का भारत पर सीधा प्रभाव पड़ा। भारत-नेपाल सीमा पर व्यापार ठप हो गया, जहां व्यापारी 'डर' के कारण बाजारों से दूर रहे। नेपाल की अर्थव्यवस्था, जो रेमिटेंस (भारत से 8.2 अरब डॉलर वार्षिक) तथा भारत से आयात पर निर्भर है, बुरी तरह प्रभावित हुई। यह घटना भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के लिए चुनौती है, क्योंकि नेपाल भारत के पड़ोसी देशों में तीसरा ऐसा मामला है जहां हिंसक विद्रोह ने सरकार गिराई।

इस पत्र का उद्देश्य राजनीतिक अस्थिरता के आर्थिक प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है। हम निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करेंगे : (1) नेपाल की ऐतिहासिक राजनीतिक अस्थिरता क्या है? (2) 2025 की घटनाओं ने आर्थिक संबंधों को कैसे प्रभावित किया? (3) क्या समाधान संभव हैं? शोध पद्धति गुणात्मक है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों (समाचार, शोध पत्र) का उपयोग किया गया है। यह पत्र नीति-निर्माताओं, विद्वानों तथा व्यापारियों के लिए उपयोगी होगा, जो साझा समृद्धि की दिशा में योगदान देगा।

राजनीतिक अस्थिरता आर्थिक विकास का प्रमुख बाधक है। विश्व बैंक के अनुसार, राजनीतिक जोखिम निवेश को 20-30 प्रतिशत कम कर देता है। नेपाल में यह समस्या गंभीर है, जहां युवा बेरोजगारी 40 प्रतिशत से अधिक है, जो प्रदर्शनों का ईंधन बनी। भारत के लिए, यह सुरक्षा चिंताओं को जन्म देता है, क्योंकि अस्थिरता उग्रवादियों को अवसर प्रदान कर सकती है। इस प्रकार, परिचय नेपाल की जटिलताओं को रेखांकित करता है तथा आगे के विश्लेषण की नींव रखता है।

साहित्य समीक्षा :

- नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता तथा इसके आर्थिक प्रभावों पर साहित्य व्यापक है, जो ऐतिहासिक, भू-राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोणों से समृद्ध है। प्रारंभिक अध्ययनों में, 2001 के बाद नेपाल के राजनीतिक संकट पर भारत की प्रतिक्रिया का विश्लेषण प्रमुख है। एक शोध पत्र में उल्लेख है कि 2001 के राजपरिवार हत्याकांड तथा माओवादी विद्रोह ने भारत-नेपाल संबंधों को तनावपूर्ण बनाया, जिससे व्यापार 15 प्रतिशत घटा। भारत ने राजतंत्र का समर्थन किया, लेकिन लोकतांत्रिक परिवर्तन के बाद सहयोग बढ़ाया।

- हाल के साहित्य में, नेपाल की भू-राजनीतिक स्थिति पर जोर है। GIS रिपोर्ट्स के अनुसार, नेपाल की अस्थिरता चीन तथा अमेरिका के साथ गठबंधनों को प्रभावित करती है, जो भारत के लिए चुनौती है। 2024 में राजनीतिक उथल-पुथल ने आर्थिक वृद्धि को 4 प्रतिशत से घटाकर 2.5 प्रतिशत कर दिया। द हिंदू के एक लेख में जेन जेड रोष के पीछे राजनीतिक अस्थिरता तथा आर्थिक कठिनाइयों को जोड़ा गया है, जो नेपाल को रेमिटेंस-निर्भर अर्थव्यवस्था बनाए रखता है।
- आर्थिक प्रभावों पर, अल जजीरा का विश्लेषण दर्शाता है कि 2025 की हिंसा ने भारत-नेपाल सीमा व्यापार को ठप कर दिया, जहां निर्यात 30 प्रतिशत गिरा। एक पीडीएफ अध्ययन में नेपाल की आंतरिक समस्याओं का दक्षिण एशिया पर प्रभाव बताया गया है, जिसमें आर्थिक तथा सुरक्षा आयाम शामिल हैं। ऐतिहासिक रूप से, 2015 के संविधान विवाद ने भारत पर नाकाबंदी का आरोप लगाया, जिससे नेपाल की अर्थव्यवस्था को 1 अरब डॉलर का नुकसान हुआ।
- विद्वानों जैसे कि लोव इंस्टीट्यूट के अनुसार, 2025 का विद्रोह भारत तथा चीन को बीच में फंसा दिया, जहां ओली का इस्तीफा भारत यात्रा से ठीक पहले हुआ। एनडीटीवी प्रॉफिट का ओपिनियन पीस भारत के आर्थिक हितों पर जोर देता है, जिसमें द्विपक्षीय व्यापार तथा भू-राजनीतिक निहितार्थ शामिल हैं। साहित्य की कमी यह है कि अधिकांश अध्ययन गुणात्मक हैं; मात्रात्मक विश्लेषण की आवश्यकता है।

समग्रतः साहित्य दर्शाता है कि राजनीतिक अस्थिरता आर्थिक निर्भरता को बढ़ाती है, लेकिन स्थिरता से लाभ संभव है। यह समीक्षा आगे के अध्यायों के लिए आधार प्रदान करती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

नेपाल की राजनीतिक इतिहास अस्थिरता का प्रतीक है, जो 1768 के गोरखा साम्राज्य से शुरू होकर वर्तमान तक फैला है। 1951 में राणा शासन का अंत तथा राजतंत्र की पुनर्स्थापना ने लोकतंत्र की नींव रखी, लेकिन 1960 में राजा महेंद्र ने पंचायत व्यवस्था लागू कर लोकतंत्र को कुचला। 1990 के जनांदोलन ने बहुदलीय प्रजातंत्र लाया, लेकिन माओवादी विद्रोह (1996-2006) ने 17,000 मौतें तथा आर्थिक क्षति की। इस दौरान भारत ने शरणार्थियों को आश्रय दिया तथा शांति प्रक्रिया में मध्यस्थता की।

2008 में राजतंत्र का अंत तथा गणतंत्र की स्थापना हुई, लेकिन उसके बाद 13 संविधान सभा तथा 30 प्रधानमंत्री बदले। 2015 का नया संविधान विवादास्पद रहा, जिसने मधेसी आंदोलन को जन्म दिया तथा भारत पर नाकाबंदी का आरोप लगाया। इससे नेपाल का ईंधन संकट उत्पन्न हुआ, तथा जीडीपी वृद्धि 0.6 प्रतिशत रह गई। भारत-नेपाल व्यापार 20 प्रतिशत प्रभावित हुआ।

2015-2020 के बीच, के.पी. ओली तथा पुष्प कमल दाहाल के बीच सत्ता संघर्ष ने अस्थिरता बढ़ाई। 2021 में सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से ओली की सरकार गिरी। Covid-19 महामारी ने आर्थिक प्रभाव को बढ़ाया, जहां रेमिटेंस 25 प्रतिशत गिरा। भारत ने 1 अरब डॉलर की सहायता प्रदान की, लेकिन राजनीतिक कलह ने परियोजनाओं को विलंबित किया।

ऐतिहासिक रूप से अस्थिरता ने आर्थिक नीतियों को बाधित किया। विश्व बैंक के अनुसार, नेपाल की राजनीतिक जोखिम सूचकांक 2024 में 65/100 रहा, जो निवेश को हतोत्साहित करता है। भारत के साथ, 1950 संधि ने खुली सीमा सुनिश्चित की, लेकिन अस्थिरता से सीमा सुरक्षा प्रभावित हुई। 2006 के बाद, भारत ने जलविद्युत में 2 अरब डॉलर निवेश किया, लेकिन माओवादी प्रभाव से देरी हुई। यह पृष्ठभूमि दर्शाती है कि नेपाल की अस्थिरता चक्रीय है, जो आर्थिक संबंधों को बार-बार प्रभावित करती है।

वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता :

2025 नेपाल के लिए टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। 4 सितंबर को 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध ने जेन जेड युवाओं को सड़कों पर उतार दिया। ये प्रदर्शन भ्रष्टाचार (10 से अधिक मामले पूर्व प्रधानमंत्रियों से जुड़े), युवा बेरोजगारी (42 प्रतिशत) तथा आर्थिक असमानता के खिलाफ थे। काठमांडू में दंगे भड़के, जिसमें 50 से अधिक मौतें हुईं तथा संपत्ति को अरबों का नुकसान। 9 सितंबर को ओली ने इस्तीफा दे दिया, तथा अंतरिम सरकार गठित हुई।

यह विद्रोह आर्थिक जड़ों से उपजा। नेपाल की अर्थव्यवस्था रेमिटेंस (25 प्रतिशत जीडीपी) तथा पर्यटन पर निर्भर है, लेकिन महंगाई 8 प्रतिशत तथा वृद्धि 3 प्रतिशत रही। युवा प्रवास बढ़ा, लेकिन घरेलू अवसरों की कमी ने रोष पैदा किया। राजनीतिक रूप से, नेपाली कांग्रेस तथा कम्युनिस्ट पार्टी के बीच गठबंधन टूटे, जो 2024 से चला आ रहा था।

भारत के लिए यह घटना पड़ोसी राजनय को चुनौती है। ओली का इस्तीफा भारत यात्रा से पहले हुआ, जिससे द्विपक्षीय समझौते प्रभावित हुए। सुरक्षा चिंताएं बढ़ीं, क्योंकि अस्थिरता सीमा पार अपराध को बढ़ावा दे सकती है। अंतरिम सरकार ने चुनावों का वादा किया, लेकिन सुधार अनिश्चित हैं।

आर्थिक संबंधों पर प्रभाव :

राजनीतिक अस्थिरता ने भारत-नेपाल व्यापार को सबसे अधिक प्रभावित किया। 2025 की हिंसा से बिरगंज तथा रक्सौल सीमा पर व्यापार 50 प्रतिशत गिरा। बाजार खाली पड़े, तथा व्यापारी 'ड' के कारण बंद रहे। भारत का निर्यात (तेल, दवाई) प्रभावित हुआ, जबकि नेपाल का आयात-निर्भरता बढ़ी। 2024 के 7.32 अरब डॉलर व्यापार अधिशेष पर असर पड़ा।

रेमिटेंस तथा मानव संसाधन :

नेपाल में 60 लाख नेपाली भारत में कार्यरत हैं, जो 8.2 अरब डॉलर रेमिटेंस भेजते हैं। अस्थिरता से प्रवास प्रभावित हुआ, तथा हिंसा ने श्रमिकों को लौटने पर मजबूर किया। गोरखा सैनिक भर्ती भी प्रभावित।

निवेश तथा परियोजनाएं :

भारत ने 1 अरब रुपये प्रांत-2 के लिए दिए, लेकिन प्रदर्शन से रेल तथा सड़क परियोजनाएं रुकीं। जलविद्युत समझौते विलंबित हुए। आर्थिक क्षति 22.5 अरब डॉलर ने दोनों देशों को प्रभावित किया।

निष्कर्ष और सुझाव :

नेपाल की अर्थव्यवस्था भारत पर अत्यधिक निर्भर है, व्यापार का 65 प्रतिशत से अधिक, पेट्रोलियम का 100 प्रतिशत आवश्यक वस्तुओं का बड़ा हिस्सा और विदेशी मुद्रा आय का प्रमुख स्रोत भारत में काम करने वाले नेपाली मजदूरों की रेमिटेंस, लेकिन जब नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है। सरकारें बार-बार गिरना, माओवादी आंदोलन, मधेश आंदोलन, संविधान संकट, तो यही निर्भरता कमजोरी बन जाती है। भारत को लगता है कि अस्थिर नेपाल उसकी सुरक्षा के लिए खतरा है, इसलिए वह हस्तक्षेप करता है। कभी प्रत्यक्ष, कभी परोक्ष। इसका सीधा असर आर्थिक संबंधों पर पड़ता है। 2015-16 का मधेश आंदोलन और उसके बाद भारत द्वारा लगाया गया अनौपचारिक नाकाबंदी इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। पाँच महीने तक सीमा पर ट्रक नहीं चले, पेट्रोल-डीजल नहीं आया, उद्योग बंद हुए, नेपाल की जीडीपी वृद्धि 0.4 प्रतिशत तक गिर गई। राजनीतिक अस्थिरता ने भारत को नाकाबंदी का बहाना दिया, और आर्थिक संबंधों को हथियार बना दिया गया। यही पैटर्न 1989-90 की नाकाबंदी में भी दिखा था जब राजा वीरेन्द्र की तानाशाही के खिलाफ भारत ने व्यापार रोक दिया था। राजनीतिक अस्थिरता के कारण नीतियाँ बार-बार बदलती हैं, कर कानून, श्रम कानून, जलविद्युत परियोजनाओं की स्वामित्व नीति में उलटफेर होता है। नतीजा, भारतीय निवेशक डरते हैं। अरुण-3, पंचेश्वर, ऊपरी कर्णाली जैसी बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ दशकों से लटकी हैं क्योंकि हर नई सरकार पुरानी संधियों को पुनर्परख करना चाहती है। 2020-25 के बीच भी कई भारतीय कम्पनियाँ (जैसे डाबर, यूनिलीवर, एसबीआई) ने विस्तार योजनाएँ टाल दीं या स्थगित कीं।

राजनीतिक अस्थिरता ने नेपाल को चीन की ओर धकेला है। जब भारत दबाव डालता है, नेपाल चीन से कर्ज, अनुदान और व्यापार बढ़ाता है। 2015 की नाकाबंदी के बाद ही केपी ओली सरकार ने चीन से व्यापार-पारबहन संधि की, रसुवागढ़ी को वैकल्पिक मार्ग बनाया। पर चीन से आने वाला माल महँगा पड़ता है, गुणवत्ता कम होती है, फिर भी राजनीतिक कारणों से नेपाल भारत के बजाय चीन को तरजीह देता दिखता है। इससे भारत-नेपाल आर्थिक संबंधों में दीर्घकालिक क्षति होती है। नेपाल जितना अधिक राजनीतिक रूप से अस्थिर रहेगा, भारत-नेपाल आर्थिक संबंध उतने ही तनावपूर्ण, असंतुलित और हथियार बनकर रहेंगे। भारत के लिए नेपाल "सुरक्षा जोखिम" और नेपाल के लिए भारत "आर्थिक दबंग" बन जाता है। जब तक नेपाल में स्थायी, समावेशी और भारत-मैत्रीपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था नहीं बनती, तब तक दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध अपने पूरे सामर्थ्य तक नहीं पहुँच पाएँगे। राजनीतिक स्थिरता ही एकमात्र कुंजी है जो आर्थिक समृद्धि के दरवाजे खोल सकती है, अन्यथा दोनों देश आपसी निर्भरता के बावजूद एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाते रहेंगे।

संदर्भ-सूची :

1. Chandra Dev Bhatta (2021) : Rooting Nepal's Democratic Spirit, Friedrich-Ebert-Stiftung (FES), Nepal Office, pp. 200.

2. S.D. Muni (1993) : India's Foreign Policy: The Democracy Dimension. Cambridge University Press. pp. 232.

3. Mahendra Lawoti (2005) : Towards a Democratic Nepal: Inclusive Political and Ethnic Transformation. Sage Publications. pp. 350

4. Arjun Karki (2018) : 21वीं सदी में भारत-नेपाल आर्थिक संबंधों की चुनौतियाँ, Indian Journal of Society and Politics, pp. 112-130.

5. R.S. Yadav (2021) : दक्षिण एशिया में राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक प्रभाव: नेपाल केस स्टडी, Journal of Political Science, 7(8), pp. 13-20.

6. C. Joshua Thomas (2006) : India-Nepal Relations : Problems and Prospects. South Asia Survey, 13(1), Pp. 51-72.

****